International Journal of Aquatic Science
ISSN: 2008-8019
Vol 12, Issue 02, 2021

छत्तीसगढ़ राज्य के धार्मिक नगरी शिवरीनारायण अंचल का ऐतिहासिक अनुशीलन(छत्तीसगढ़ के संदर्भ में)

Dr. Pradeep Kumar Kesharwani[1] Aastha Pandey[2]

[1]Research Guide, Department of History, Kalinga University, Naya Raipur, Raipur Chhattisgarh
[2]Research Scholar, Department of History, Kalinga University, Naya Raipur, Raipur Chhattisgarh

गिरौदपुरी धाम (ऐतिहासिक व धार्मिक स्थल)

भौगोलिक परिदृष्य

गिरौदपुरी धाम छत्तीसगढ़ के भौगोलिक स्थिति के अनुसार 21.3549^{0}N ′82.3408^{0}E/ 21.597^0 N 82.569^0 E पर स्थित है। जिसकी जिला मुख्यालय बलौदाबाजार–भाटापारा से दूरी लगभग 48 किमी. है।

खोज के विषय का विवरण

बलौदाबाजार से लगभग 48 किलोमीटर दूरी पर महानदी व जोक नदी के संगम स्थल पर गिरौदपुरी गांव, एक धार्मिक व ऐतिहासिक स्थलों में से एक सतनाम पंथ के प्रर्वतक गुरू घासीदास जी की तपोभूमि गिरौदपुरी हैं। यह गुरू घासीदास जी का जन्म स्थल है। इनका जन्म 18 दिसम्बर 1756 सोमवार को हुआ था। यह सतनामी समाज का प्रमुख तीर्थ स्थल है। गिरौदपुरी में गुरू घासीदास का निवास गुरू निवास कहलाता है। यहां गुरू की गद्दी स्थापित है यहां पहाड़ी पर औरा–धौरा वृक्ष के नीचे गुरू तपस्या की थी, यह स्थल तपोभूमि कहलाता है। तपोभूमि के पास ही ''छाता पहाड'' स्थित है। यहां से 1 किलोमीटर की दूरी पर प्राचीन कुण्ड ''चरण व अमृत'' कुण्ड है। इस कुण्ड का जल मीठा रहता है।

इसके निकट ही गुरूघासीदास जी की पत्नी सफरामाता का मठ है जो जो अपने पुत्र अमरदास के वन में जाने के वियोग में समाधिस्थ हो गयी थी।

International Journal of Aquatic Science
ISSN: 2008-8019
Vol 12, Issue 02, 2021

विषाल जैतखाम

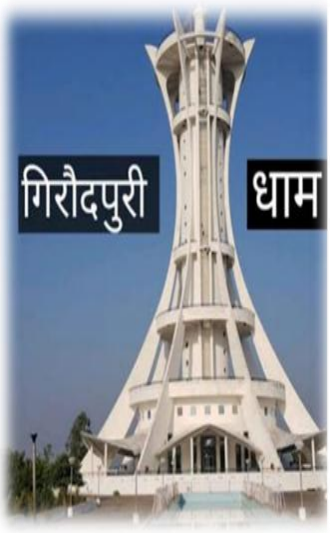

गिरौधपुरी में ही कुतुबमीनार से भी जगभग 5 मीटर ऊंचे जैतखाम का निर्माण किया गया है इसकी ऊचांई 77 मी. है। इस विशाल जैतखाम की

असाधारण ऊंचाई को ध्यान में रखते हुए उसकी डिजाइन को III (हडली) के तकनीकी विशेषज्ञो से अनुमोदित कराया गया है । यह जैतखाम वायुदाब तथा भूकम्परोध बनाया गया है। इसके आधार तल पर एक विशाल सभागृह का निर्माण किया गया है।

इस प्रकार गिरौदपुरी का ऐतिहासिक व धार्मिक रूप दोनों ही प्रकार से अत्यधिक महत्व माना जाता है।

सिद्धखोल जलप्रपात

भौगोलिक परिदृष्य

सिद्धखोल जलप्रपात धाम छत्तीसगढ़ के भौगोलिक स्थिति के अनुसार 21.6206^0N '82.4245^0E/पर स्थित है। जिसकी जिला मुख्यालय बलौदाबाजार–भाटापारा से दूरी लगभग 10 किमी. है।

खोज के विषय का विवरण

सिद्धखोल, जलप्रपात बलौदाबाजार जिले में कसडोल पिथौरा राजमार्ग पर कसडोल से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह सिद्ध बाबा के रूप में भी प्रसिद्ध स्थल है। सिद्ध बाबा वास्तव में एक छोटी सी घाटी है। जहां ऊपर की चोटी से पानी का प्रवाह नीचे 40 फीट नीचे गिर जाता है। जिसे सिद्धखोल वाटर फॉल के रूप में जाना जाता है।

International Journal of Aquatic Science
ISSN: 2008-8019
Vol 12, Issue 02, 2021

यहां पर एक सिद्ध बाबा का मंदिर भी स्थित हैं। जो प्राचीन मंदिर है। यहां एक मौसमी, जलप्रपात है। अतः बारिश के समय यहॉ की खुबसूरती लोगों को अपनी ओर आकृषित करती है। यहॉ का झरना अत्यन्त ही मनमोहक होता है। जो लोगों के आकर्षण का केन्द्र होता है। तथा यहॉ के प्राकृतिक दृश्य इसे और भी खूबसूरत बनाते है। इस झरने के नीचे भाग में शेर की गुफा है और चारों तरफ से जंगल पेड़–झाड़ियों और पहाड़ियों से घिरा हुआ है। जो पर्यटकों को आकर्षित करती है।

सिद्धखोल जलप्रपात में संपूर्ण दृश्य को देखने हेतु एक वॉच टॉवर बनाया गया है। जहाँ से इस जलप्रपात का बहुत ही विहंगम दृश्य देखा जा सकता है। सिद्धखोल जलप्रपात जाने हेतु सर्वोत्तम समय जुलाई से नवंबर तक है। इस दौरान यहाँ जलप्रपात में जल स्तर अत्यधिक रहता है। जो यहां के दृश्य को अत्यन्त मनोरम बनाते है। इस स्थान को और अधिक विकास की आवश्यकता है। यह बिलासपुर से 85 किमी. व रायपुर से 140 किमी. की दूरी पर स्थित है।

सिद्ध बाबा के पास होने से होने से आप पूर्ण रूपेण मंत्रमुग्ध हो जाते है। जैसा की हम जान चुके है। यह एक छोटी सी घाटी है। जैसे ही हम इस छोटी सी घाटी में उतरते है हमें झरने के नीचे जलाशय (जल–कुण्ड) तक पहुँचने के लिए लगभग 50 सीढ़ियां पुरी करनी पड़ती हैं। जलाशय लगभग 5 फीट गहरा जो घाटी की सीमा तक मोटी वनस्पतियों से घिरा हुआ है। बारिश के मौसम में इस नाले का पानी 40 फीट की ऊँचाई से गिरता है। और आगे घाटी में आ जाता हैं। इस जलप्रपात के दाहिनें किनारे पर एक बलुआ पत्थर की गुफा भी हैं जिसे सिद्ध बाबा की कुटी भी कहा जा सकता है। इस कुटी तक पहुँचने के लिए सिद्ध बाबा के जलाशय के दाहिने किनारे तक पहुँचने के लिए एक परिधि लेनी पड़ती है, जहाँ यह कुटी जलप्रपात की तलहटी से लगभग 15–20 फीट ऊपर स्थित है।

स्पष्टताः इस घाटी की घनी हरियाली व वनस्पति को देखकर आप सचमुच चंकित रह जायेंगें। अतः यह स्थान विशुद्ध रूप से दर्शनीय स्थल है।

<u>बारनवापारा अभ्यारण्य</u>

भौगोलिक परिदृष्य

बारनवापारा अभ्यारण्य छत्तीसगढ़ के भौगोलिक स्थिति के अनुसार 21.479^{0}N ′82.45231^{0}E ⁄ के अनुसार 21. 2844^{0}N ′82.3152^{0}E पर स्थित है। जिसकी जिला मुख्यालय बलौदाबाजार–भाटापारा से दूरी लगभग 50 किमी. है। तथा राजधानी रायपुर से 100 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

खोज के विषय का विवरण

यह अभ्यारण्य, बलौदाबाजार जिले में स्थित, जो 245 वर्ग किलोमीटर कें क्षेत्रफल में फैला हुआ हैं। इसे वन्य जीव अभ्यारण्य के रूप में 1972 में वन्यजीव अधिनियम के तहत घोषित किया गया था। परन्तु यह अभ्यारण्य के रूप में 1976 में अस्तित्व में आया। यह अभ्यारण्य समूचित पहाड़ी क्षेत्र का मिश्रण है जो 265 मी. से 400 मी. के क्षेत्र में फेला हुआ है। बारनवापारा का नाम अभ्यारण्य के हृदय स्थल पर बसे दो अन्य ग्रामो बार व नवापारा पर आधारित है। इसका कुछ क्षेत्र महासमुंद जिले में भी स्थित है। जो इस जिले के उत्तरी भाग पर आता है। इस अभ्यारण्य में चार सिंग वाले हिरण, बाघ, तेंदुए, जंगली भैसे, अजगर बारसिंग हिरण हाइना साही चिकारा व ब्लेंक बॉस आदि पाये जाते है। तथा पक्षियों में बगुले, बुलबुले, इरगेट्स और तोता आदि की कई प्रजातियां देखी जा सकती है।

यह वन क्षेत्र शुष्क पर्णपाती पेड़ो और विभिन्न प्रकार के वृक्षों से समृद्ध है। जिसमें तेंदु, बीर, सेमल, साक, टीक और बेल शामिल है।

बारनवापारा वन्यजीव अभ्यारण्य अपने हरे भरे वनस्पति व अद्वितीय वन्य जीवन के लिए प्रसिद्ध है। बालमदेही नदी व जोंक नदी, अभ्यारण्य से होकर बहती है। इसमें 22 वन्यग्राम है। इसके अंतर्गत निम्न दर्शनीय स्थल आते है।

जो इस प्रकार है :– 1. तुरतुरिया 2. देवधारा 3. छाता पहाड़ 4. मातागढ 5. तेलईधारा 6. कुरूपाठ 7. देवपुर पहाड़ी 8. सिद्धखोल।

परन्तु नई सुविधाओं के अभाव में इस अभ्यारण्य कर सुंदरता से देश–विदेश के सैलानी वंचित है। इनके और विकास से यह देश विदेश के लिए रमणीय पर्यटक स्थल के रूप में विकसित होगा।

धमनी

भौगोलिक परिदृष्य''धमनी'' छत्तीसगढ़ के भौगोलिक स्थिति के अनुसार 21.5249864^0N '82.2392616^0E/पर स्थित है। जो जिला मुख्यालय बलौदाबाजार – भाटापारा से लगभग 15 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। तथा राजधानी रायपुर से 72 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

खोज के विषय का विवरण

यह स्थल बलौदाबाजार से लगभग 15 किमी. दूर स्थित पलारी के पास रोहांसी ग्राम से 6 किमी. दूरी पर स्थित है। इस गांव का नाम धमनी है अतः इस स्थान को धमनी पर्यटक स्थल के नाम से जाना जाता है।

यह स्थान महानदी के किनारे स्थित है यह प्राचीन व प्रसिद्ध स्थल है। यहॉ पर प्राकृतिक वातावरण लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यह स्थान महानदी के तट पर स्थित है जिसके कारण यहॉ का प्राकृतिक वातावरण और भी आकर्षक लगता है। चूंकि इसके चारो ओर घने वन से आच्छादित है जिसमें कभी–कभी जंगली जानवर भी देखे जा सकते है। यहॉ पिकनिक के पर्यटकों को आसानी से देखा जा सकता है। परन्तु विकास के अभाव में यह क्षेत्र अत्यन्त लोकप्रिय नहीं हो पाया है। अत :' इस क्षेत्र को और विकास की आवश्यकता है।

यह स्थान प्रकृति व नदी के साथ मिलकर अच्छा व आकर्षक पर्यटन स्थल है। चूँकि इसके चारों ओर वन क्षेत्र स्थित है। अकसर इस स्थान पर हाथियों के झुण्ड को भी देखा जाता है। यह स्थान हिरयाली से परिपूर्ण है तथा साथ ही महानदी इस स्थान को और भी रमणीय बनाती है । परन्तु यह क्षेत्र पर्यटन के दृष्टिकोण से अधिक विकसित नहीं हो पाया हैं। इस स्थान को और अधिक सुन्दर व रमणीय बनाने हेतु और अधिक प्रयास की आवश्यकता हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. छत्तीसगढ़ इनसाइड स्टडी (अरिहन्त प्रकाशन) नवीन चन्द्राकर, अबरार हुसैन।
2. छत्तीसगढ़ जिला दर्शन व सामान्य ज्ञान (उपकार प्रकाशन) डॉ. एम.एस. सिसोदिया व आर. के. सिंह।
3. Inde-du-Nord : M.P., C.G. (9 SBN)
4. छत्तीसगढ़ के मेला व मड़ई (2007)
5. https:// balodabazar.gov.in